दिनांक :- 12-05-2020

कॉलेज का नाम – मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम – डॉ०-फ़ारूक़ आजम (अतिथी शिक्षक)

स्नातक – प्रथम खंड (कला)

विषय – प्रतिष्ठ इतिहास

इकाई – [illegible]

पत्र – प्रथम

अध्याय – छठी शताब्दी ईसा पूर्व स्त्रोत

यूनानी आक्रमण के प्रभाव – यूनानी आक्रमण का प्रभाव राजनीतिक से ज्यादा सँस्कृतिक रहा।

व्यापारिक सँपर्क बढ़ा। भारतीय सिक्के यूनानी उलूक मॉडल पर ढाले जाने लगी।

भारतीय कला पर यूनानी प्रभाव पड़ा जैसे अशोक स्तंभ के शीर्ष पर अंकित पशु मुर्तियों पर कहीं न कहीं यूनानी प्रभाव महसूस किया गया। दूसरी तरफ भारतीय कला तथा

यूनानी कला के संयोगी से गांधार कला का विकास हुआ।
इस आक्रमण के साथ अनेक यूनानी विद्वान भारत आये जिनके विवरण
के आधार पर भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण हो सका।

राजतत्व का सिद्दान्त तथा प्रशासन

इस काल मे जनपद का स्थान महाजन पहले रहा था। इस समय
के अधिकांश महाजनपद राजतंत्रीय व्यवस्था से संचलित होते थे
परंतु सभी राजतंत्रो की प्रशासनिक व्यवस्था भी एक जैसी प्रतीत
नहीं होती है।
ऐतरेय ब्राह्मणो मे पांच प्रकार के राज्यो की चर्चा है: उदाहरण
के लिये साम्राज्य, भोज्य, स्वराज्य, वैराज्य तथा राज्य !

(1) मगध, कलिंग तथा बंग के शासक सम्राट कहलाते थे। उनका अभि
षेक सदैव अपने साम्राज्य के लिये होता था। ऐसे शासक सदैव
अपने राज्य के विस्तार के लिए प्रयत्नशील रहते थे।

(2) दक्षिण के सात्वती (यादवो) का राज्य भोज्य कहलाता था तथा उनके
शासक भोज के नाम से जाने जाते थे। ऐसे शासक वंशानुगत

नही होते थे, बल्कि उनकी नियुक्ति निश्चित अवधि के लिये की जाती थी।

③ पश्चिम दिशा जैसे सौराष्ट्र, कच्छ, सौवीर इत्यादि में स्वराज्य प्रणाली प्रचलित थी। यहाँ के शासक स्वराट्कहलाते थे। इस व्यवस्था में राजा की स्थिति समानों में श्रेष्ठ (First Among the equals) की थी। यह व्यवस्था बहुत कुछ कुलीन-बारी बारी से शासन में हिस्सा लेते थे।

④ उत्तरी क्षेत्र (हिमालय) में वैराज्य प्रणाली प्रचलित थी। यहाँ के शासक विराट कहलाते थे। इन राज्यों में प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि ही शासन भार सँभालते थे।

⑤ मध्यदेश में राज्य व्यवस्था थी। यहाँ के शासक राजा कहे जाते थे जैसे - कुरू, पाँचाल, काशी, कोशल आदि इन जगहो पर परंपरागत राजतंत्रात्मक व्यवस्था थी। यहाँ के शासक राजा कहे जाते थे।

इस समय राज्य के अंतर्गत बहुत सारी अर्थव्य गतिविधियाँ
हो रही थी जिससे कर भुगतान करने वाले नये आर्थिक समूह
का निर्माण हो रहा था।
इस विकास में करारोपण प्रणाली निर्धारित हो गई एवं बलि शुल्क
और भाग नामक कर पूरी तरह स्थापित हो गये। उत्तर वैदिक
काल में हम करारोपण से जुड़े भागदुघ नामक अधिकारी की
चर्चा सुनते हैं किन्तु इस युग में करारोपण से जुड़े आठा दर्जन
से अधिक अधिकारियों की सूचना मिलती है। जैसे-
(i) बलिसाधक :- बलि वसूल करने वाला
(ii) शौल्किक :- शुल्क
(iii) रज्जुग्राहक : भूमि की माप करने वाला।
(iv) द्रोण मापक - अनाज के तौल का निरीक्षक (उधा धन एक अन्य
राजकीय कर था जो राजा के पुत्र के जन्म के अवसर पर लिया
जाता था। व्यापारियों से चुंगी कर भी वसूली जाती थी।

Scanned with CamScanner

राजा की शक्ति में वृद्धि हुई क्योंकि करारोपण प्रणाली के व्यवस्थित होने से स्थायी सेना एवं रक्त संबंध से पृथक नौकरशाही की स्थापना हुई। स्थायी सेना की स्थापना इस तथ्य से भी प्रामाणित होती है कि मगध शासक बिंबिसार अपने को क्षेत्रिय बिंबिसार कहता है जिसका अर्थ होता है सेना का बिम्बिसार। उसी तरह कोशल के शासक अपने को अधिकारमदमर्त कहता है।

इस समय राजा की शक्ति में भी वृद्धि हुई। क्योंकि करारोपण प्रणाली के व्यवस्थित होने से स्थायी सेना एवं रक्त संबंध से पृथक नौकरशाही की स्थापना हुई। स्थायी सेना की स्थापना इस तथ्य से भी प्रमाणित होती है कि मगध शासक अधिकारमदमर्त कहता है।

इस समय राजा की शक्ति में वृद्धि हुई है और उसे ब्राह्मण तथा सेठों को अनुदान देने में समुदाय की अनु

नीति की आवश्यकता नहीं थी।

इस समय रक्त संबंध से पृथक नौकरशाही की स्थापना हुई। अधिकतर अधिकारी पुरोहित वर्ग से चुने जाते थे। नये अधिकारियों में आयुक्त एवं महामात्र की सूचना मिलती है। जातक कथाओं में कुछ दमनात्मक अधिकारियों की भी सूचना मिलती है, जैसे तुन्दिया तथा अकाशिया, बलपूर्वक कर की वसूली करते थे। इस समय सभा और समीति जैसी कबायली संस्थाएं टूट गई तथा उसका स्थान परिषद ने ले लिया। परिषद के अतिरिक्त ब्राह्मण भी राजा के सलाहकार के रूप में स्थापित हो गये। परिषद के साथ-साथ एक संगठित नौकरशाही का भी उदय इस युग में हुआ। राजा अपनी सहायता के लिये अनेक पदाधिकारियों को नियुक्त करने लगा। राज्य के प्रमुख अधिकारियों का वर्ग महामात्र कहलाता था। इसी वर्ग से मंत्री, सेनानायक, प्रधान, न्यायाधीश, कोषाध्यक्ष आदि नियुक्त किये जाते थे। इन अधिकारियों के पद

वंशानुगत नही थी। जातक कथाओ से ज्ञात होता है कि इस वर्ग कि अधिकारियो मे भ्रष्टाचार आम बात थी। राज्याधिकारीयो को नकद वेतन दिया जाता था। गणतंत्री के केन्द्रीय परिषदो के साथ-साथ स्थानीय परिषदे भी होती थी। इस राज्य की आमदनी का मुख्य साधन भूमिकर था जो उपज का 1/6 होता था। इस वजह से राजा को कभी-कभी षड्भागिक भी कहा जाता था। आमदनी का अन्य साधन उद्योग धंधो तथा व्यापार से प्राप्त पूंजी थी।

कर एकत्र करने वाला अधिकारी बलिसाधक नाम से जाना जाता था कर को खजाने मे जमा करने तथा खजाने की देख रेख के लिये भाण्डगारिक तथा कोषागारिक (शौल्किक) जैसे अधिकारी थे। ग्राम प्रधान को राजस्व वसूली मे मदद करना था कर मुख्यतः वैश्य वर्ग से वसूला जाता था। प्रशासन की छोटी ईकाई के रूप मे कुल के स्थान पर है।